॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

॥ श्री गुर्वष्टकम् ॥

विषय सूची

॥ श्री गुर्वष्टकम् ॥ 3

भवदीय :

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष
श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय: ॥

॥ श्री हरि ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री गुर्वष्टकम् ॥

श्रीमद भगवत पूज्यपाद आद्य शङ्कराचार्य प्रणीतम्

शरीर सुरूपं तथा वा कलत्रं यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम् ।
मनचैन लग्नं हरेड्पिझे । ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥१॥

यदि शरीर सुन्दर हुआ तो उससे क्या? यदि स्त्री सुन्दर हुई तो उससे भी क्या? अत्यन्त निर्मल अतएव सुन्दर कीर्ति और सोनेके सुमेरुपर्वतके समान विपुलधन होनेसे भी क्या लाभ हुआ ? यदि निष्कपट शुद्धभावसे जगद्गुरु हरि परमेश्वरके चरणों में मन को नहीं लगाया ? ॥१॥

कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादि सर्वं गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम् ।
गुरोरङ्घ्रिपझे मनचैन्न लग्न ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥२॥

स्त्री, धन, पुत्रपौत्रादि सब कुछ तथा गृह, जाति बन्धुवर्ग इत्यादि होनेपर भी यदि हरिरूप श्रीगुरुदेवके चरणकमल में मन को न लगाया तो ऐसे जीवन से क्या लाभ हुआ ? ॥२॥

षडङ्गादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति॥
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥३॥

यदि शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिषादि छः अङ्गों सहित अगादि वेद, पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा, सांख्य, योग, न्याय तथा वैशेषिक आदि शास्त्र और चौदही विद्याओं को कण्ठस्थ भी करलियाहो तो उससे कुछ भी लाभ नहीं और गद्यपद्यात्मक काव्यादि रचनेकी क्षमता भी किसी अर्थ की नहीं यदि गुरूके चरणों में मन नहीं लगाया गया ॥ ३॥

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः ॥
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥४॥

विदेश में मान हो, स्वदेश में प्रशंसा हो, और अपनी सदाचारपरायणता का इतना अभिमान हो कि, मुझसे अधिक सदाचारी दूसरा कोई है ही नहीं, यह सब होने पर भी यदि गुरुदेवके चरणकमल में निष्कपटभाव से मन नहीं लगा तो इन सब से कुछ भी लाभ नहीं ॥४॥

क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दैः सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम् ।
गुरोरपिङ्घे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥५॥

जिसके चरणकमलों की सेवा पृथ्वीमण्डल के राजा महाराजा लोग सदा करतेहों ऐसे मनुष्यका इतना बड़ा सम्मान भी निष्फल है यदि श्रीगुरुदेवके चरणोंमें निष्कपट भावसे मनको नहीं लगाया ॥ ५॥

यशो मे गत दिक्षु दानप्रतापा जगद्वस्तु सर्व करे यत्प्रसादात् ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥६॥

मेरा यश दानके प्रताप से सम्पूर्ण दिशाओं में व्याप्त है जिसके अभावसे संसारके सारे पदार्थ मेरे हस्तगत है ऐसा समझनेवाले दानशील का दान भी निष्फल है यदि गुरुदेवके चरणोंमें निष्कपटभाव मन नहीं लगाया ॥६॥

न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम्।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनचैन लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥७॥

यदि कोई ऐसा जितेन्द्रिय हो कि जिसका चित्त न तो भोग विलास में, न हठयोगादि में, न उत्तम घोडों में, न चन्द्रमुखी कामिनी में अपनी सदाबारी दूसरा और न धनधान्यादिके संग्रह में आसक्त हुआ परन्तु ऐसी अनासक्ति होते हुए णकमल में भी यदि श्रीगुरुदेवके चरणों में निष्कपटभावसे मन नहीं लगाया तो उसके जितेन्द्रियता से कोई लाभ नहीं ॥७॥

अरण्ये न वा खस्य गेहे न कार्ये न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्ध्ये ।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनचैन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥८॥

यदि कोई ऐसा विरक्त हो कि जिसकी मनोवृत्ति वन में, निज परिवारपूरित घर में, व्यापार में, शरीरके पालनपोषणादि में तथा अमूल्य पदार्थों के संग्रहादि किसीभी कार्य में नहीं लगी परन्तु फिरभी यदि श्रीगुरुदेव के चरणकमलों में उसका मन नहीं लगा, तो उसका वह वैराग्य बिलकुल निरर्थक हैं ॥८॥

अनणि रत्नानि मुक्तानि सम्यक् समालिङ्गिता कामिनी यामिनीषु।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनचैन्न लग्नं नेसके ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥९॥

यदि श्रीगुरुदेवके चरणकमलों में निष्कपटभाव से मन नहीं लगाया गया तो अमूल्य रत्नों का तथा मुक्तादिक का उपभोग और रात्रि में कोमलकलेवरा चन्द्रमुखी कामिनियों का भलीप्रकार आलिङ्गन करना इत्यादि सब प्रकारके सुख निष्फल हैं यदि श्रीसद्गुरुचरणमें प्रीति नहीं ॥१०॥

गुरोरष्टकं यः पठेत्पुण्यदेही यतिभूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही ।
लभेद्वाञ्छितार्थं पदं ब्रह्मसंज्ञे गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम् ॥१०॥

जो पुण्यात्मा, संन्यासी, नृपति, ब्रह्मचारी, तथा गृहस्थ इस अष्टकको पढता है, जिसका मन श्रीगुरुदेवके कहे हुए वाक्यों में लगा हुआ है तथा गुरूके वाक्योंकी श्रद्धा और विश्वासपूर्वक हृदय से अङ्गीकार

करता है वह अभिलषित अर्थरूपी परब्रह्म को प्राप्त होता है अर्थात् ब्रह्म में लीन होजाता है ॥ १० ॥

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्ति !!!

॥ इति श्री गुर्वष्टकम् संपूर्णम् ॥